भक्तियोग को ही अंगीकार करता है। 'नारायणीय' में इस सत्य की सम्पुष्टि है:

या वै साधनसम्पत्तिः पुरुषार्थचतुष्टये।
तया विना तदाप्नोति नरो नारायणाश्रयः।।

इस श्लोक के अनुसार, नाना प्रकार के सकाम कर्म अथवा मनोधर्ममय ज्ञान-मार्ग में प्रवृत्त नहीं होना चाहिये। श्रीभगवान् के परायण भक्त को अन्य यौगिक पद्धतियों, ज्ञान, कर्मकाण्ड, यज्ञ, दान, आदि से होने वाले सम्पूर्ण लाभ सुलभ हो जाते हैं। यह भक्तियोग का विशिष्ट अनुग्रह है।

पवित्र कृष्णनाम—**हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे, हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे** के कीर्तन से भक्त का परमधाम में सुखपूर्वक सुगमता से प्रवेश हो जाता है, जबकि अन्य किसी भी पद्धति के द्वारा वहाँ तक नहीं पहुँचा जा सकता।

भगवद्गीता का निष्कर्ष अट्ठारहवें अध्याय में इस प्रकार है:

सर्वधर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज।
अहं त्वां सर्वपापेभ्योः मोक्षयिष्यामि मा शुचः।।

स्वरूप-साक्षात्कार की अन्य सभी पद्धतियों को त्याग कर कृष्णभावनाभावित होकर भक्तियोग का आचरण करना चाहिये। इससे जीवन का परम लाभ हाथ लग जायेगा। पूर्वजीवन के पापों के लिये चिन्ता करना व्यर्थ है, क्योंकि श्रीभगवान् उसका सम्पूर्ण दायित्व स्वयं अपने ऊपर ले लेते हैं। अतएव साधन-सिद्धि में अपनी मुक्ति का व्यर्थ प्रयास करने के स्थान पर जीव को सर्वसमर्थ परमेश्वर श्रीकृष्ण का आश्रय ग्रहण करना चाहिए। यही जीवन की परम कृतार्थता है।

मय्येव मन आधत्स्व मयि बुद्धिं निवेशय।
निवसिष्यसि मय्येव अत ऊर्ध्वं न संशयः।।८।।

मयि=मुझ में; **एव**=ही; **मनः**=चित्त को; **आधत्स्व**=एकाग्र कर; **मयि**=मुझ में; **बुद्धिम्**=बुद्धि को; **निवेशय**=नियुक्त कर (अर्पण कर); **निवसिष्यसि**=निवास करेगा; **मयि**=मुझ में; **एव**=ही; **अतः ऊर्ध्वम्**=इसके अनन्तर; **न संशयः**=निःसन्देह।

अनुवाद

अपने मन को मुझ भगवान् में एकाग्र कर और संपूर्ण बुद्धि से मेरा ही चिन्तन कर। इसके अनन्तर निःसन्देह तूं सदा मुझ में ही निवास करेगा, अर्थात् मुझ को ही प्राप्त होगा।।८।।

तात्पर्य

भगवान् श्रीकृष्ण की भक्ति के परायण मनुष्य का ठन परमेश्वर से प्रत्यक्ष सम्बन्ध रहता है। अतः उसकी स्थिति प्रारम्भ से ही दिव्य है, इसमें कोई सन्देह नहीं। भक्त लौकिक स्तर पर नहीं रहता; वह श्रीकृष्ण में निवास करता है। श्रीभगवान् के पावन नाम और स्वयं श्रीभगवान् में भेद नहीं है। अतः जिस समय भक्त **हरे कृष्ण** कीर्तन करता है, उस समय श्रीकृष्ण और उनकी अन्तरंगा आह्लादिनी शक्ति उसके